प्रश्न 18. उमापतिक ‘ धनिक विशेष ’ रचनाक भावार्थ लिखू ।

उतर - ‘ धनिक विशेष ’ पारिजात हरण मे संकलित अछि । उमापती मुख्यरूपसँ नाटककार छलाह । नाटक संस्कृत्मे रचित अछि । बीच - बीच सरस मनोरंजनक लेल मैथिलीमे गीत सभ देल गेल अछि । परिजात पुष्प देवलोकमे श्रीकृष्णक प्राप्त भेलन्हि । ओ पुष्प कृष्ण रूक्मिणी के द देलन्हि , ई सूनि सत्यभामा मान क लेलह्नि । यथा - पद अछि ।

कि कहव माधव तनिक विशेषे ।

अपनहु तन धनि पाव कलेशे ।

सत्यभामा श्रीकृष्णसँ कहैत छथि हे माधव अपना देहक सत्यकथा कि कहु अपन देह अपने दुःख द रहल अछि ।

अपनुक आनन आरसि हेरी ।

चानक भरम काँप कत बेरीहे

कृष्ण अहाँक मुँह देखि हम भ्रम मे पड़ि जाइत छी जे की हम चंद्रमाकेँ त नहि देखिल रहल ची जँ भ्रमसँ अपन हाथ अपने छाती पर पडि जाइत अछि त अहाँक हाथक भ्रम होइत अछि । आइ अपने सौंदर्य हमरा लेल कष्टकारी भ गेल

चिकुर निकर निअ नयन निहरी ।

जलधर जाल जनि हिय्हारी ॥

अपन बचन पिक रव अनुमाने ।

हरि- हरि तेहुपरि तेजए पराने ॥

हे माधव अपन केश , मुँह , स्तन के सौन्दर्य हमरा लेल दु:खक कारण बनि गेल अछि।लगैत अछि जेना मेघक जाल मे फसल होअए हृदय ओहिना हाहाकार क रहल अछि ।